Subject- Maithili (IInd semester)
Paper code- CC-9, MTL-531
Topic- Manbodhak 'Krishnajanm'

Format- PDF

Name/contact- Dr. Sudhir Kumar Jha
Department of Maithili
Patna University
Mo- 9661819662
email- ~~drsudhirjha1170@gmail.com~~
drsudhirkrjha1170@gmail.com

Scanned with CamScanner

मनबोधक 'कृष्णजन्म'

अठारहम शताब्दी मे महाकवि मनबोधक प्रादुर्भाव सँ मैथिली साहित्य कैं एक नव दिशा भेटलैक। पारम्परिक श्रृंगारक श्रृंखला कैं ढाहि मनबोध भक्तिक सरिता प्रवाहित कए देल। हिनक 'कृष्णजन्म' महाकाव्य मे एक दिश जँ भक्तिक अजस्र स्रोत उमड़ल अछि तँ दोसर दिश वात्सल्य रस सेहो पहिले-पहिल मैथिली साहित्य मे मुड़ी उठओलक। वस्तुत: कृष्ण-जन्मक की प्रयोजन, ओहि प्रयोजनक सिद्धि, कृष्णक बाल-लीला, विदेशी आक्रमण सँ आक्रान्त भारतवसुन्धराक दलित-मर्दित स्थिति; एहि सकल घटनाक उल्लेख मनबोधक 'कृष्णजन्म' मे लक्षित होइत अछि।

मनबोधक उक्त कृतिक माध्यम सँ एक नवीन विधा, अभिनव विषयवस्तु ओ सहज, सरल बोधगम्य भाषाक जन्म भेल। हिनका सँ पूर्व विद्यापति धरि जे गीत-काव्यक रचना होइत छल से रागतालबद्ध गायन शैली मे लिखल जाइत छल। मनबोधक पहिल नवीनता रागरागिनी मिश्रित पद किंवा गीतक रचना नहि कए नूतन कथा-काव्य शैली मे भेटैत अछि। हिनके सँ मैथिली प्रबन्धकाव्य लिखबाक परम्परा आरम्भ भेल। जँ ई महाकाव्य लिखबाक प्रथम प्रयास छल, तँ काव्यशास्त्र मे उल्लिखित सर्ग लक्षण सँ युक्त नहि भए सकल। परञ्च डॉ. जयकान्त मिश्र ओ प्रो. रमानाथ झा दुनू गोटा एकरा महाकाव्यक संज्ञा देने छथि। सुमनजीक अनुसारें एकरा लक्षणानुसारी महाकाव्य-खण्डकाव्य नहि, पौराणिक कथा-काव्य कहब उपयुक्त थिक।

कविकोकिल विद्यापति, हुनक समसामयिक आ परवर्ती कविलोकनिक रचनाक विषय मुख्यत: श्रृंगारिक होइत छल। श्रृंगार रसक वर्णन मे दुइ अवलम्बनक प्रयोजन पड़ैत छैक। ओ अवलम्बन होइत अछि: नायक-नायिका। तत्कालीन कवि समुदाय अपन श्रृंगारिक रचनाक अवलम्बन ओ आधारक मूर्त्त रूप राधा-कृष्ण मे देखल। ओलोकनि संयोग आ विप्रलम्भक धार मे राधा-कृष्ण कैं पूर्णत: अवगाहित कए देल आ श्रीकृष्ण रसिक शिरोमणि नायक रूप मे रूढ़िबद्ध भए गेलाह। महाकवि मनबोध पहिल व्यक्ति भेलाह जे श्रृंगार रूपी नदीक कलकल तीव्र प्रवाह कैं अवरुद्ध कए ओहि मे पूर्णत: निमज्जित श्रीकृष्ण कैं बहार कएल। ओ 'कृष्णजन्म' द्वारा मैथिली कृष्णकाव्य मे नव दृष्टिक उन्मेष कएल, कृष्णक नव मूर्ति गढ़लन्हि, आदर्श ओ गरिमा सँ समन्वित हुनक नव छवि सजाओल। एहि महाकाव्य मे एक तँ श्रृंगारक वर्णन मुख्य रूप मे कतहु अछिए नहि। जँ कतहु रासलीलाक चर्चा आएल अछि वा कृष्णक वियोगें व्याकुल ब्रजवनिताक चित्र देखाओल गेल अछि तँ ओ श्रृंगारमय शैली मे नहि अपितु ओहू मे भक्तिए भावक पुट भेटैत अछि। यथा,

तरुन सबहु मन ई प्रतिभसल।
कर सों ससरि परसमनि खसल॥

Scanned with CamScanner

मधुर रमनि जखन हरि देखती।
जीवन जनम सुफल कए लेखती॥
ई कहि झाँखथि सुमरथि गून।
हरि बिनु नगर सगर भेल सून॥

मनबोध अपन रचना मे कृष्ण कें भूमिभारहर्त्ता, दुष्टदलनकर्त्ता, धर्मसंस्थापक एवं उद्धारक आदि रूप मे चित्रित कए कृष्ण-जन्मक यथार्थता कें स्थापित कयल। पृथ्वी स्वयं ब्रह्मा आदि देवता लोकनिक संग विष्णुक समक्ष अपन वेदना लए उपस्थित होइत छथि—

कहय लागु धरनी हरि हेरी।
हम हयब मेदिनि रसातल फेरी॥
अमर समर जत जूझल असूर।
तत जनमल अछि परिजन पूर॥
हय हाथी हथियारक भार।
गिरि कानन बरनय के पार॥
सर्वसहा एहि नाम सों आज।
सपथ करिअ हम अयलहुँ बाज॥

पृथ्वीक इयह वेदना कृष्ण-जन्मक प्रयोजन भेल। विष्णु धरती कें धैर्य रखबाक लेल कहैत छथि—

करुनामय कौं करुना भेल।
धैरज बहुत धरनि कौं देल॥
धरनी किछु दिन धैरज धरब।
हम अवतरब भार सब हरब॥

एहि तरहें भगवान विष्णु, कृष्णक रूप मे अन्याय-अधर्मक अन्त करबा लेल पृथ्वी पर अवतरित होइत छथि। ओ पूतना कें मारलन्हि, शकट-भञ्जन कयल, अर्जुनक दुनू गाछ कें उपाड़ल, कालिमर्दमन कयल, प्रलम्बक संहार कयल, गोवर्द्धनलीला कयल, कुवलयपीड़ नामक हाथी कें मारल आ संगहिं कंसहुक वध कयलन्हि। ततबे नहि, पदाति कंसक परिवार एवं मित्रवर्गक संहार सेहो कयल। एहि तरहें पृथ्वी पर कृष्णावतारक जे रहस्य छल तकर पूर्ति भेल। मनबोधक कृष्ण कें जतेक मानिनि राधिकाक मानभंजनक चिन्ता नहि छलन्हि, रूसलि प्रेमिका कें बौंसबाक उद्विग्नता नहि छलन्हि, ततेक व्यग्रता छलन्हि पापी आ दुराचारीक संहार कए संसारक भार हरण करबाक।

मनबोध सँ पूर्व मैथिली साहित्य मे वात्सल्य रसक सर्वथा अभाव देखल जाइत अछि। विद्यापतिक काव्य मे 'नन्दकनन्दन' जे 'कदम्बक तरुअर' समय संकेत निकेतन बइसल मुरलीक मधुर निनाद कयलन्हि तकर प्रतिध्वनि 'समस्त परवर्त्ती काव्य मे गुंजित होइत रहल।' 'यमुनाक तीर उपवन' मे उद्विग्न चिर किशोर कृष्णक इयह रूप परवर्त्ती काव्यकारव

लेल उपजीव्य रहल एवं कृष्णक एहि विलास आमोदक वर्णन सँ हुनका लोकनिक काव्यक पृष्ठ-पृष्ठ उन्मादक रहल। परञ्च बालछवि मे जे एकगोट मृदुता अछि, ओकर कौतुक मे जे एकटा आह्लाद रहैत अछि, ताहि दिश एकमात्र मनबोधक ध्यान गेल। ओ कृष्णक बाललीला एवं माता यशोदाक मातृत्वक वर्णन कए एकटा नव परम्पराक श्रीगणेश कएल। बालकृष्ण कतेक बेर आगि छुबि पाकि जाथि, कतेको बेर चून कें दही बुझि खाथि, करनो साँप कें पकड़ए हाथ बढ़ाबथि, ठेहुनियाँ दए करनहुँ आँगन सँ बहराए जाथि आ कएक बेर तँ माता यशोदा कें दुरुखा पर सँ हुनका पकड़ि आनए पड़न्हि। कृष्णक एहि बालसुलभ क्रीड़ा करनहुँ 'जसोमति काँ भेल जीवक जंजाल' आ करनहुँ 'हरखथि हँसथि जसोमति रानी।' 'कृष्णजन्म'क निम्न पाँती मे मातृत्वक निर्वाह बड़ सहज रूपेँ भेल अछि—

कहलन्हि सिखबह हमरहि ताही।
टांग तोरिअ तौं केओ हम नाही॥
मानिअ नहि एते एत बरजीअ।
अहीं हमर सभ केओ भेल दीअ॥
ई कहि बन्हलन्हि उखरि लगाए।
कहलन्हि पुत रिंग जाउ तौं पराए॥

कृष्ण द्वारा अर्जुनक विशालकाय वृक्ष खसओला उत्तर यशोदाक हृदयक आकुलताक जे चित्रण अछि से सन्ततिक प्रति एकटा मायक ममता कें द्योतित करैत अछि —

आँगन सुन देखि नयन नोरायल।
जसोमति काँ हिअ हाथ हेरायल॥
की फल भेल मोहि एतेक अगोरि।
ने हरि उखरि नहि ओ डोरि॥
कनइत जसोमति पहुँचलि जाय।
नेरु हेरएने जेहने धेनु गाय॥

एहि तरहेँ वात्सल्य रसक निष्पत्तिक लेल कवि यशोदाक मातृत्व कें महिमान्वित कएल। पूर्वक कवि लोकनिक दृष्टि नारीक रूप-माधुर्य एवं श्रृंगारिक बहुविध-वर्णनहि धरि सीमित रहलन्हि। ओलोकनि ई बिसरि गेलाह जे नारीत्वक चरमोत्कर्ष ओकर मातृत्व मे छैक। मैथिली काव्यक प्रेमिका नारी सर्वप्रथम मनबोधक काव्य मे मातृरूप मे चित्रित होइत छथि। फलतः मैथिली काव्य मध्य नारी-भावनाक जे प्रचलित दृष्टिकोण छल ताहि सँ भिन्न अथच नव दृष्टिकोण लए मनबोध ओकर मातृत्वक प्रतिष्ठा कएल।

'साहित्य समाज केर दर्पण थिक', 'कृष्णजन्म' एहि

उक्तिक पूर्णतः पुष्टि करैत अछि। तत्कालीन मैथिल संस्कृतिक स्पष्ट छाप एहि मे दृष्टिगोचर होइत अछि। ओहि कालक मैथिल समाजमे आधुनिके जकाँ बालकक जन्म भेला पर भरि गाम हकार देल जाइत छल, घर-आँगन मे उत्सव होइत छल। धिआपुताक अलौकिक वा अस्वाभाविक कष्ट कें दूर करबाक लेल 'चुमाएब' पूर्वहु लोक मे प्रचलित व्यवहार छल। शुभ अवसर पर गीतनाद होइत छल। तत्कालीन बालक 'टेलबा-टेलइ' नामक खेल खेलाइत छल। कार्य करबाक लेल जखन सँ पूर्व मालिक कें 'सलाम' करबाक प्रथा छल। नेना कें 'मुँहबौआ' प्रभृति सँ डेराओल जाइत छल। मृतकक स्पर्श भेने आइए-काल्हि जकाँ गंगाजल लेबाक प्रथा छल। मदबाक विचार ओहू दिन मे मिथिला मे खूब छल। तेँ जखन कृष्ण मथुरा जएबाक लेल छथि तँ केओ-केओ गोपी ज्योतिषक आँगन जाए कहलथिन्ह जे जँ 'पुछए आबथि तँ मदबा कहब।' भाए आदिक पूर्ण व्यवहार छल। गोरहा पर चढ़ि लोक कें देखबाक चेष्टा मिथिलाक ग्राम्य-जीवनक अत्यन्त स्वाभाविक चित्रण थिक —

> एकहक गोरहा चारि चारि चढ़ली।
> की रह संच की विरहक मरली॥

सभ सँ बढ़ि मिथिला बेतिया आ मगह कें पृथक् करबाक स्पष्ट वृत्तान्त पहिले-पहिल मनबोधहिक रचना मे भेटैत अछि। एहि प्रकारेँ 'कृष्णजन्म' मे छोट सँ छोट बात मे मैथिलत्वक एवं मिथिलाक जीवन ओ संस्कृतिक प्रभाव छैक।

मनबोध भाषाक दृष्टिएँ सेहो मैथिली साहित्य मे नवीनता आनल। ओ 'कृष्णजन्म' मे सरल, सहज, सर्वबोधगम्य लोकभाषाक व्यवहार कएल जे पाठकक जिह्वा पर अनायासे आबि जाइत छैक। यद्यपि विद्यापति सेहो अपन रचना मे सामान्यजनक भाषाक प्रयोग कएलन्हि परञ्च हुनक बाद ओ मनबोध सँ पूर्व जतेक कवि भेलाह से सभ विषयक प्रसंग तँ कविकोकिलक अनुकरण-अनुसरण कएल मुदा हुनका लोकनिक भाषा जनसाधारण मे प्रचलित नहि भए संस्कृतनिष्ठ होइत गेल। महाकवि मनबोध ओहन शब्द, ओहन भाषा कें अपनाओल जकर व्यवहार हमरा लोकनि नित्य अपन क्रियाकलाप मे करैत छी। सरल भाषाक स्पष्टार्थ किछु उदाहरण द्रष्टव्य थिक —

(क) गोबर गोंत सगर लपटाएल।
बल बस जाए सतबितँहि आएल॥

(ख) मूनल आँखि दहो दिस दौर।
परबत सन उच कान्ह कन्हौर॥

(ग) हरि पहुनाइ कहए के पार।

ठेँठ मैथिलीक ठाठ द्रष्टव्य अछि-

'बकदए दाढ़, ठेठ, झकझक, समदावाड़ी, काढ़ी, नेओंत, बेओंत, झटहा, नीक, फुराएल आदि।'

शब्दविन्यास आ ठेँठ मैथिलीक बीच-बीच मे लोकोक्तिक प्रयोग 'कृष्णजन्म' क भाषाक कलेवर मे प्राणक संचार कए देलक अछि। यथा,

... कर्मक लिखल मेटय के पार
... जसोमति काँ हिअ हाथ हेरायल
... कर सौं ससरि परसमनि खसल
... कालक धएल कतहु केअओ बाँच

मनबोध स्थान-स्थान पर अलंकारक प्रयोग सेहो करने छथि-

कटला तरु जकाँ खसु अड़राय - उपमा
तारक तरु जनि लबनी लागल - उत्प्रेक्षा
एक टक हेरथि सकटक निकट - अनुप्रास

एहि पोथीक भाषा-विषयक महत्व पर प्रकाश दैत डॉ. ग्रियर्सन लिखैत छथि-

The Poem is deserving of special attention as an example of the Maithili of the last century, affording a connecting link between the old Maithili of Vidyapati and the modern Maithili of Harshnath and the other writers of the Present day.

उपर्युक्त विश्लेषण सँ स्पष्ट अछि जे मनबोधक 'कृष्णजन्म' विषय आ भाषा दुनू दृष्टिएँ नवीन युगक श्रीगणेश करलक।

सन्दर्भ-संकेत

1. कृष्णजन्म (मनबोध) : (सम्पा.) म. म. उमेश मिश्र, पृ-49
2. तत्रैव, पृ-2,3
3. तत्रैव, पृ-3
4. तत्रैव, पृ-15
5. तत्रैव, पृ-16
6. तत्रैव, पृ-49
7. तत्रैव, पृ-36
8. तत्रैव, पृ-37
9. तत्रैव, पृ-55
10. तत्रैव, पृ-7
11. तत्रैव, पृ-16
12. तत्रैव, पृ-49
13. तत्रैव, पृ-58
14. तत्रैव, पृ-13
15. तत्रैव
16. तत्रैव, पृ-14
17. अनुशीलन अवबोध: डॉ. वासुकीनाथ झा, पृ-59

Scanned with CamScanner